Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 4, July-Aug – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/07/2020 Accepted on : 20/07/2020 Publication Date: 31/08/2020

"सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोरावस्था के विद्यार्थियो का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन"

१.मनीष कुमार कुमावत २.डॉ.सोनिया कौर बंसल
१.एम.एड. छात्र ज्ञान विहार स्कूल ऑफ एजूकेशन सुरेश ज्ञान विहार विश्वविधालयो , जयपुर, राजस्थान
२.अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, शोध निर्देशिका, ज्ञान विहार स्कूल ऑफ एजूकेशन, सुरेश ज्ञान विहार विश्वविधालयो ,जयपुरराजस्थान।
ई-मेल आई डी : kumawatmanish68@gmail.com

सार रूप: सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति का पता लगाना। ऑकड़ों को एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता ने मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया जो किशोरावस्था के विद्यार्थियों का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पता लगायेगा। शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन करने के लिए यादृच्छिक विधि का उपयोग किया। सांख्यिकी विष्लेषण के लिए मध्यमान, मानकविचलन और टी-टेस्ट का उपयोग किया। निष्कर्षों से पता चलता है कि सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था।
मुख्य बिन्दु: व्यावसायिक शिक्षा, किशोरावस्था के विद्यार्थियों, ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र , अभिवृत्ति ।

१ प्रस्तावना :

प्राचीन काल मे मनुष्य का जीवन अत्यन्त सरल था।उसका सामाजिक स्वरूप भी सहज ही था।मनुष्य ने जैसे-जैसे ज्ञान की प्राप्ति की और अनुसंधान से जुड़ी उसकी प्रवृत्तियाँ जाग्रत होने लगी।अनुसंधान व विज्ञान की प्रगति ने आधुनिक समाज को जटिल बना दिया।परिणामतः अनेक व्यवसायो की उत्पत्ति हुई।बढ़ती जनसंख्या से हमारे सामने एक प्रमुख समस्या उभरकर आयी है वो है बेरेजगारी की समस्या।बेरोजगारी की समस्या को स्वरोजगार द्वारा दूर किया जा सकता है। इसके लिये व्यावसायिक शिक्षा सर्वश्रेष्ठ विकल्प सिद्ध हुआ है।वर्तमान शिक्षा नीति मे अनेकानेक बदलाव आवश्यकहै सत्य यह है कि हमारी शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितार्थथी जिसे वर्तमान समयानुसार बदला नही जा सका है।स्वतन्त्रता के साथ-साथ साक्षर व्यक्तियो की संख्या मे निरन्तर वृद्धि के बावजूद आज बेरोजगारो की संख्या मे तुलनात्मक वृद्धि देखी गई है।भारतीय शिक्षा नीति के निर्धारको मे यदि योजना विकास के प्रारम्भिक वर्षो मे ही शिक्षा का व्यावसायिक शिक्षा को शुरूकर दिया होता तो आज यह स्थिति नही आती।सरकार को युवाओ मे व्यावसायिक शिक्षा के प्रति चेतना जगाने की अत्याधिक आवश्यकता है।तभी इस स्थिति से सफलतापूर्वक निपटारा हो सकता है।व्यावसायिक शिक्षा के बारे मे प्राचीन समय से ही अनेक धारणाएँ सामने आने लगी थी पर समय व परिस्थिति के अनुसार इस का स्वरूप अलग ही नज़र आने लगा है।वर्तमान मे शिक्षा व व्यवसाय एक दूसरे के पर्याय माने जाने लगे हे।शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो कि समाज परिवर्तन की क्षमता रखती है तथा इस आमूलचूल परिवर्तन के लिए उत्तरदायी सिद्ध हो सकती है।

व्यावसायिक शिक्षा का सामान्य अर्थ है किसी व्यवसाय मे प्रशिक्षण।यह एक व्यवसाय को सीखना है ताकि जीवन यापन के लिए व्यक्ति को योग्य बनाया जा सके।विस्तृत अर्थ मे व्यावसायिक शिक्षा से अभिप्राय है कि शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रो को शिक्षा के साथ-साथ उन्हे किसी व्यवस्था मे भी कुशल व्यक्ति बनने मे मदद करे।

कोठारी कमीशन ने व्यावसायिक शिक्षा का व्यापक विचार प्रस्तुत किया है, "हम यह देखते हेकि भविष्य की स्कूल शिक्षा का स्थान साधारण शिक्षा व तकनीक शिक्षा के लाभप्रद संयोग मे है जिसमे पूर्व तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के कुछ हिस्से शामिल हेऔर परिणाम स्वरूप सामान्य शिक्षा का तत्व आ जाता है। हम जिस प्रकार के समाज मे रह रहे हे, उसमे इन दोनो प्रकार की शिक्षा को अलग-अलग करना अनुचित ही नही वरन् असम्भव होगा"।

२ व्यावसायिक शिक्षा की परिभाषाएँ :

सामाजिक विज्ञानी विश्वकोष के अनुसार - "व्यापक रूप मे व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत उन सब प्रकार की शिक्षा को शामिल या सम्मिलित किया जा सकता है जिसके द्वारा किसी व्यक्तिय को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है।"

यूनेसको के अनुसार - "व्यावसायिक शिक्षा एक व्यापक प्रत्यय है।इसके अन्तर्गत शैक्षिक प्रक्रिया के सभी पक्ष तथा सामान्य शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, विज्ञान से सम्बन्धित अतिरिक्त प्रयोगशाला, कौशल अभिवृत्तिया,ज्ञान तथा बोध से सम्बन्धित अतिरिक्त पक्षो को सम्मिलित किया जाता है।जिनका सम्बन्ध आर्थिक, सामाजिक जीवन तथा रोजगार की तैयारी से भी होता है। इस प्रकार की शिक्षा सामान्य शिक्षा का समन्वित खण्ड सतशिक्षा तथा रोजगार क्षेत्र की तैयारी का होता है।

३ व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व :

प्रत्येक राष्ट्रीय व राष्ट्रवासियो की यह इच्छा होती है कि शिक्षा सभी लोगो की आवश्यकताओ व मांगो की पूर्ति करे।इसके लिए एक विशेष प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।व्यवसायीकरण शिक्षा कई ढंग से सहायक हो सकती है -

१.भारत मे अधिकतर लोग गरीब हे।वे अत्यन्त कठिनाई से अपना जीवनयापन करते हे।परिणाम स्वरूप वे अपने बच्चो को स्कूल भेजने मे असमर्थ हे।यह स्वाभाविक है कि सर्वप्रथम अपने जीवन यापन पर विचार करेगे और बाद मे शिक्षा पर,परन्तु व्यावसायिक शिक्षा दोनो उद्देश्यो की पूर्ति मे सहायक है।

२.व्यावसायिक शिक्षा बेरोजगारी की समस्या के उन्मूलन मे सहायक है।भारत मे बेरोजगारी की समस्या एक प्रमुख समस्या है। अतः ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो शिक्षित युवको मे बेरोजगारी की समस्या का समाधान करे।निश्चित रूप से व्यवसायीकरण व्यक्तियो को किसी एक व्यवसाय मे निपुण बनाती है। महात्मा गांधी के शब्दो मे - "शिक्षा बेरोजगारी के विरूद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए"।
अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यवसायीकरण कुशलता होना चाहिए।

४ व्यावसायिक शिक्षा के सिद्धान्त :

व्यावसायिक शिक्षा के कुछ सिद्धान्त निम्नलिखित है:-

१.योजनाबद्ध–व्यावसायिक शिक्षा को केवल प्रायोगिक विषयो के बारे मे जानकारी प्रदान नही करनी चाहिए।इसे पहले योजनाबद्ध बनाना चाहिए और फिर प्रारम्भ करना चाहिए।

२.सार्वजनिक शिक्षा का अंश–व्यावसायिक शिक्षा को भिन्न विषयो से ही परिचित नही करवाना चाहिए।इसका पूर्ण सम्बन्ध सार्वजनिक शिक्षा के प्रवाह के साथ होना चाहिए।

५ समस्या का औचित्य :

शिक्षा वह माध्यम है जिससे सम्पूर्ण समाज मे एक सशक्त आमूलचूल परिवर्तन लाया जा सकता है।शिक्षा द्वारा समाज अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति करता है तथा प्रगति पथ पर बढ़ताहै।अनेक चिनतको,विचारको, शिक्षाशास्त्रियो व राजनीतिज्ञो ने शिक्षा प्रक्रियाओ को नया स्वरूप देने मे अपने विचार व्यक्त कर मार्गदर्शन किया है।

सभी प्रमुख विचारो का क्रमशः अध्ययन हमे यह दिशानिर्देश देता है कि शिक्षा सदैव व्यवसायोन्मुखी हो जो छात्रो को ज्ञानमय तथा गरिमामय जीवन प्रदान करने मे सक्षम सिद्ध हो सके।तात्कालीन परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा को व्यावसायीकरण द्वारा आधुनिकीकरण की तरफ मोड़ना अत्यधिक आवश्यक है।इस संदर्भ मे कोठारी कमीशन ने एक प्रतिवेदन का आरम्भ निम्न वाक्यो से किया है -

"इस समय भारत के भाग्य का निर्माण उसके अध्यन कक्षा मे हो रहा है।विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी पर आधारित आज के विश्व मे शिक्षा ही व्यक्तियो की सम्पन्नता,समृद्धि व सुरक्षा के स्तर को निश्चित करती है।"

(कोठारी कमीशन)

यह बात तय है कि वर्तमान पीढ़ी मे विज्ञान व प्रौद्योगिकी का अपना-अपना महत्व स्पष्ट हो रहा है क्योकि व्यवसायी बन कर ही बालक अपने जीवन स्तर को उच्च उठा सकेगे व देश के लिए उत्पादक व उपयोगी नागरिक की भूमिका अदा करेगे।वर्तमान मे यदि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति छात्रो की रूचि जागृत नही की गई तो हमारा देश कई युगो पीछे चला जाएगा और हम उन्नति के वनस्पत अवनति की ओर बढ़ने लगेगे।कोठारी कमीशन ने उचित परामर्श दिया है कि हम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण की आवश्यकता पर विशेष बल देवे।माध्यमिक शिक्षा तक छात्र अपने जीवकोपार्जन से युक्त शिक्षा पाना चाहते हे।अतः आवश्यकता यह उभरकर आती है कि विभिन्न व्यावसायो या किसी व्यावसायिक संस्था का कार्यरत हिस्सा बने।यह छात्र व देश दोनो के हित मे होगा।छात्र आगे बढ़कर अन्तोगत्वा देश का ही विकास करेगे।

वर्तमान मे भारत सरकार एवं राज्य सरकार करोड़ो रूपयो के व्यय से छात्रो को व्यावसायिक शिक्षा मे जोड़ने के लिए प्रयासरत है जिसके लिए यह अनेक विकासोन्मुखी योजनाओ का कार्यान्वयन कर रही है।

६ शोध समस्या कथन:

"सवाईमाधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन"

संबंधित साहित्य का अध्ययन :

देश मे हुये अध्ययन -

गोखले, एच.वी. ए स्टडी ऑफ वोकेशनलाईजेशन एट2 स्टेज (कोमर्सस्ट्रीम) जी.एस. कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनॉमिक्स, नागपुर, 2016

अध्ययन के उद्देश्य थे -

१.विद्यार्थियो के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन करना।
२.शिक्षा के व्यावसायिकरण मे शिक्षा सम्बन्धी छवी व समस्याओ का अध्ययन करना

न्यादर्श का चयन -

न्यादर्श के रुप मे नागपुर शहर के दो कॉलेजो का चयन किया गया।सर्वे के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया।कक्षा-12 के 40 विद्यार्थियो पर सर्वेक्षण किया तथा आंकडो का एकत्रिण किया।

निष्कर्ष :

१.सामान्य पाठ्यक्रम की तुलना मे वर्तमान का व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपयोगी था, लेकिन विद्यार्थियो के स्वंय रोजगार व अन्य रोजगारो के निर्माण मे असफल था।

२.व्यावसायिक पाठ्यक्रम के साथ कक्षा-12 पास करने के बाद सरकार रोजगार और वित्तिय सहायता जैसी समस्याओ का निवारण नही करती।

३.प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिये विभिन्न संस्थाओ और मेहमान व्याख्यान के लिए उपयुक्त व्यवस्था नही थी।

अदवन्त, एस.बी.एन. इवेल्युशन ऑफ वोकेशनल कोर्स इन्ट्रोड्यूस्ड एट दा एट2 लेवल इन मराठवाडा – ए केस स्ट्डी।रिपोर्ट प्रिपेयर्ड फॉर दा प्रोजेक्ट ए स्ट्डी ऑफ रीजनल इमबेलेन्स इन वोकेशनल एजुकेशन एण्ड मैनपॉवर प्लानिंग इन मराठवाड़ा स्वामी रामानन्द तीर्था रिसर्च इन्स्टीट्यूट औरंगादाद 2016

उद्देश्य -

1. मराठवाड़ा मे 2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के लिये क्या सुविधाये हो का अध्ययन करना।
2. 2 स्तर पर संस्थाओ द्वारा संचालित व्यावसायिक शिक्षा के लिये प्रशासन, वितित्य व अकादमी जैसी समस्याओ का अध्ययन करना।
3. २ स्तर पर स्थानीय आवश्यकताओ के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम के निर्माण से सम्बन्धित अध्ययन करना।

न्यादर्श -

मराठवाड़ा मे कला, विज्ञान व वाणिज्य के 75 कॉलेज थे उनमे से 38 कॉलेजो मे व्यावसायिक विषय था।सभी कॉलेजो का प्रति चयन किया।सूचना एकत्रित करने के लिये प्रश्नावली व साक्षात्कार का प्रयोग किया।

निष्कर्ष -

औरंगाबाद जिले के ज्यादातर संस्थाये व्यावसायिक शिक्षा से परिचित थी।

मराठवाडा मे जयादातर कृषि थी, पांच विधालयो पशु विज्ञान से सम्बन्धित थे जबकि केवल तीन फलस विज्ञान से परिचित थे।

शिक्षण प्रशिक्षण व्यावसायिक विषय की पूर्व जैसी स्थिति थी।सरकार को इन कॉलेजो का संगठन एन स ई आर टी के आधार पर करना चाहिये।

७ विदेशो में किये गये अध्ययन :

मैकेनिक (2018) ने अपने शोध "वोकेशनल एज्यूकेशन ऑफ स्टूडेन्ट्स" मे इस तथ्य का पता लगाया कि पब्लिक माध्यमिक विद्यालयो मे शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियो मे 45 प्रतिशत ने अपने स्वंय के सुझाये व्यावसायो को अपनाया था।इनमे से मात्र 39 प्रतिशत छात्र ही सफल रहे थे।

रेर्जलरडा. एजग्स (2018) ने अपने शोध "वोकेशनल एज्यूकेशन ऑफ सेकेण्डरी स्टूडेन्टस" मे कार्य करते हुये यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकतम विद्यार्थिया - ने इंजीनियरिंग को अपनी पसन्द, सामाजिक मान्यता व आर्थिक लाभ को दृष्टिगत रखते हुये दी।बालक प्रशासन कार्य मे रुचि नही रखते क्या-कि ऐसा करना सुरक्षा की दृष्टि से तथा स्तर की दृष्टि से वांछित समझा जाता है।

अध्ययन के उद्देष्य:-

सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के किशेरावस्था के छात्र एवं छात्राओ की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ:-

सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या:-

ग्रामीण क्षेत्र – प्रस्तावित लघु शोध में ग्रामीण क्षेत्र से तात्पर्य उन किशोरावस्था के विद्यार्थियों के निवास से है जो कि ग्रामों में स्थापित एवं संचालित हो रहे निजी तथा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत है।

शहरी क्षेत्र–प्रस्तावित शोध में शहरी क्षेत्र से तात्पर्य उन किशोरावस्था के विद्यार्थियों के निवास से है जो कि शहरों में स्थापित एवं संचालित हो रहे निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत है।

किशोरावस्था के विद्यार्थी –प्रस्तावित शोध में किशोरावस्था के विद्यार्थी से तात्पर्य 14 से 17 वर्ष की आयु के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

व्यावसायिक शिक्षा – यह महाविद्यालयी स्तर के नीचे प्रदान की जाने वाली शिक्षा है जिसका उद्देश्य किन्हीं विशेष पेशी को सीखने के इच्छुक या सेवारत व्यक्तियों को व्यावसायिक कौशल सिखाना या उसमें वृद्धि करना है।इसके अन्तर्गत व्यापार औद्योगिकी, कृषि, तकनीकी शिक्षा आदि आते हे।

८ शोध विधि :

प्रस्तुत अनुसंधान में 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया गया है।

शोध की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 120 किशोरावस्था के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

किशोरावस्था के विद्यार्थि(120)

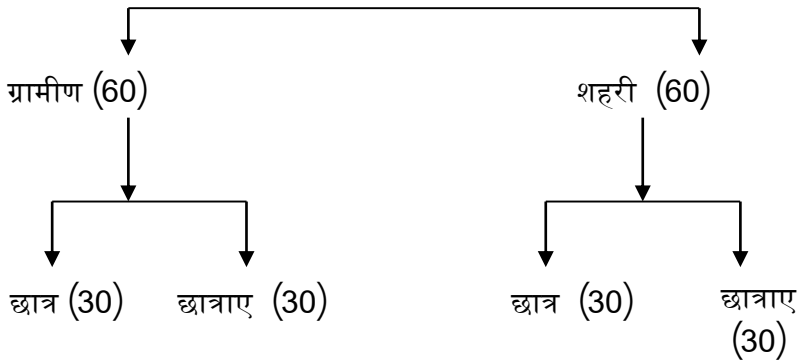

शोध के उपकरण:

प्रस्तुत अध्ययन में शोध कर्ता ने मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

परीक्षणों की सहायता से संग्रहित किए गए आंकड़ों से प्राप्त सूचनाऐं जटिल असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है।उचित विवेचना के लिए सामग्री को संगठित करना आवश्यक है।इसके लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है।

- **टीटेस्ट**

शोध परिणाम व व्याख्या :

परिकल्पना 01

सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समुह	विधार्थि संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	परिकल्पना स्वीकृत/ अस्वीकृत
छात्र	30	29.33	9.62	0.71	स्वीकृत
छात्राये	30	27.7	7.95		

उपरोक्त सारणी संख्या 01 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सवाई माधोपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृति को दर्शाया गया हैं।सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा की संख्या क्रमश 30, 30 ली गई है।जिसमें छात्रों का मध्यमान 29.33 एवं छात्राओं का मध्यमान 27.7 निकल कर आया है।तथा छात्र का मानक विचलन 9.62 है, जबकि छात्राओं का मानक विचलन 7.95 है। दोनों का टी मूल्य 0.71 है तथा यह निष्कर्ष निकल कर आया है कि यह परिकल्पना स्वीकृत हैं।

९ शैक्षिक निहितार्थ:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर हम कह सकते है कि 11 वीं कक्षा के किशोरावस्था के विद्यार्थियो मे शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।क्योंकि शिक्षक ही एक अच्छा मित्र होता है जो उन्हे सही मार्गदर्शन देने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है बिना शिक्षक के किशोरावस्था के विद्यार्थी एक बिना नौका के समान होता है।

१.बच्चो के माता-पिता का व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत करना ताकि वे अपने बच्चो को शिक्षा सामान्य बच्चो के साथ दे।
२.सामान्य विधालयो मे अध्ययनरत शिक्षकों एवं सामान्यबच्चोकेअभिभावाकोकीव्यावसायिकशिक्षाकेप्रतिसकारात्मकदृष्टिकोणलाना।
३.विधालय प्रशासन का भी दायित्व है कि सभी बच्चों को वे सभी सुविधाएं प्रदान करायी जाये जिससे सभी उन सुविधाओ का लाभ उठा सके।

१० भावी शोध हेतु सुझाव :

१.प्रस्तुत शोध कार्य सवाई माधोपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर किया गया है। भावी शोधकर्ता अन्य जिले के विद्यार्थियों को लेकर भी कर सकता है।
२.आगामी शोध कार्य माध्यमिक एवं विष्वविधालयो स्तर के किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
३.प्रस्तुत शोध मे आर.बी.एस.ई. के विद्यालायों को लिया गया है।भावी शोधकर्ता सी.बी.एस.ई. के विद्यालयों को भी लेकर कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१ यूनेस्को (1994), दि सलमानकार स्टेटमेंट एण्ड फ्रेमवर्क फॉर एक्शन ऑन स्पेशल निड्स एजुकेशन, पेरिस-यूनेस्को।
२ एन.सी.एफ.एस.ई. (2000), नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन, नईदिल्ली।
३ एन.सी.एफ.(2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, नई दिल्ली।
४ झा, मदनमोहन (2003), व्यावसायिक शिक्षा – दृष्टिकोण व प्रक्रियाएँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
५ यूनेस्को (2003), व्यावसायिक शिक्षा दृष्टिकोण से बहिष्करण पर काबू, एक चुनौती, पेरिस: यूनेस्का।
६ शर्मा, आर.ए (2009), अनुसंधान विधियाँ, एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
७ श्रीवास्तव, डी.एन. (2011), अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
८ अग्निहोत्री, रविन्द्र (1994), आधुनिक भारतीय समस्याएँ और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
९ शर्मा, आर.ए. (2009), 'विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप', सूर्या पब्लिकेशनस्, मेरठ।
१० झा, मदनमोहन (2003), व्यावसायिक शिक्षा दृष्टिकोण व प्रक्रियाएं, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
११ यूनेस्को (1994), दि सलमानकार स्टेटमेंट एण्ड फ्रेमवर्क फार एक्शन ऑन स्पेषल निड्स एजूकेशन पेरिस-येनस्को
१२ डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन (1988), नेषनल पॉलिसी ऑफ एजेकेशन, 1986, नई दिल्ली, एम.एस.आर.डी., जी.ओ.आई।
१३ एन.सी.ई.आर.टी. (2000), नेषनल करीकुलम फ्रेमवर्क फार स्कूल एजुकेशन (एन.सी.एफ.एस.ई.) नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.।
१४ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005), एन.सी.ई.आर.टी. (नईदिल्ली)
१५ यूनेस्को (2003), समावेषी-शिक्षा दृष्टिकोण से बहिष्करण पर काबू, एक चुनौती स्पेन, पेरिस: यूनेस्को
१६ डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्र, (2018) व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा एवं चुनौतिया, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष-37, अंक-1, जनवरी-जून 2018।

ACKNOWLEDGMENTS:

प्रस्तुत शोध पत्र को समय पर पूर्ण करने का श्रेय निर्देशिका

डॉ. सोनीया कौर बसंल को जिन्होने लगातार मुझे इस शोध में प्रेरित किया और मुझे अपना कीमती समय प्रदान किया साथ ही उन्होने सुझाव और सलाह के साथ शोध पत्र का चारों तरफ से मार्गदर्षन किया है एवं उनके धीरज प्रोत्साहन, तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षण के बिना यह शोध अनुसंधान को पूरा करना संभव नहीं होता।

मैं अपनी संस्था की प्राचार्या डॉ. श्रुति तिवारी के प्रति कृतज्ञ एवं श्रद्दा अभिभूत हूँ जिनके स्नेहिल व्यवहार ने मुझे सीखने का माहौल, कार्य के प्रति निष्ठा एवं नए विचारों के माध्यम से कार्य को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना एवं उसको वैज्ञानिक चिंतन के द्वारा हल करने हेतु सदैव मुझे शोध कार्य के प्रोत्साहित किया।

मैं अपनी संस्था की डॉ. रजनी चोपडा, डॉ. महेन्द्रकुमार धाकड, डॉ. विभा कौशिक, डॉ. रोमा सिंह, डॉ. भावना कुलश्रेष्ठ और डॉ. ज्योति यादव को धन्यवाद देना चाहता हूँ जब भी शोध कार्य में अध्ययन को पूरा करने के लिए मुझे जरुरत पडी तब अपना बहुमूल्य समय दिया।उन्होने मुझे दिखाया कि अध्ययन की वास्तविकता को सही ढंग से कैसे पूरा किया जाये जो मेरी आगे की जरुरतों के लिए आवश्यक था।

मैं अपने मित्र पवन सोनी को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होने सदैव शोध कार्य में मेरा मार्गदर्शन किया एवं आँकडो के विश्लेषण एवं व्याख्या करने में मुझे मानसिक रुप से शोध कार्य को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करने को तत्पर किया।

अंतत उस परम तत्व के प्रति अपनी श्रद्दा प्रकट करता हूँ जिसकी प्रेरणा और शक्ति के आधार पर प्रस्तुत यह शोध कार्य साकार हो सका।